भगवती चरण वोहरा : हथियार और विचार के अद्भुत समन्वयक

अभिनव कनौजिया, शोधार्थी, गांधी फैज ए आम(पीजी) कालेज, शाहजहांपुर
E-mail : abhinavkanaujia123@gmail.com
डॉ. तनवीर हुसैन,सहायक प्राध्यापक, गांधी फैज ए आम(पीजी) कालेज, शाहजहांपुर
(महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली से संबद्ध)
E-mail : tanveerpasha2013@gmail.com

शोध सार

क्रांति एक व्यापक अवधारणा है। यह केवल सशस्त्र संघर्ष तक सीमित नहीं है बल्कि एक व्यापक वैचारिक प्रक्रिया पर भी आधारित है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारी आंदोलन में जिस प्रकार का स्थान बम और पिस्तौल जैसे हथियारों का था; उसी प्रकार का महत्व क्रांतिकारी विचारधारा, वैचारिक स्पष्टता तथा संगठनात्मक दृष्टि का भी था। यद्यपि अधिकांश क्रांतिकारी इन दोनों पक्षों-हथियार और विचार- की दृष्टि से धनी थे तथापि कुछ ऐसे व्यक्तित्व भी थे जिन्होंने दोनों क्षेत्रों में असाधारण दक्षता का परिचय दिया और क्रांतिकारी आंदोलन को वैचारिक तथा व्यवहारिक दोनों स्तरों पर नई दिशा प्रदान की।

इन व्यक्तियों में भगवती चरण वोहरा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। सामान्यतः इनका स्मरण बम निर्माता अथवा संगठनकर्ता के रूप में स्मरण किया जाता है, किंतु इनका वास्तविक योगदान इससे कहीं अधिक व्यापक था। वे हिंदुस्तान सोशालिस्ट रिपब्लिकन ऐसोसिएशन के प्रमुख वैचारिक स्तंभों में से एक थे, जिन्होंने लेखन, संगठन तथा वैचारिक विमर्श के माध्यम से क्रांतिकारी आंदोलन की बौद्धिक आधारशिला को सुदृढ़ किया। उन्होंने लेखन के माध्यम से क्रांति की अवधारणा को केवल हिंसात्मक प्रतिरोध तक सीमित न रखकर उसे सामाजिक परिवर्तन, राजनीतिक स्वतंत्रता और समाजवादी पुनर्निर्माण से जोडने का प्रयास किया।

प्रस्तुत शोध भगवतीचरण वोहरा के व्यक्तित्व के दो प्रमुख आयामों-हथियार और विचार - का विश्लेषण करता है। जहां एक ओर उन्होंने हिंदुस्तान सोशालिस्ट रिपब्लिकन ऐसोसिएशन के लिए विस्फोटक निर्माण रणनीति तथा संगठनात्मक कार्यों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी, वहीं दूसरी ओर 'द फिलॉसफी ऑफ द बम' और 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन ऐसोसिएशन के घोषणापत्र' जैसे दस्तावेजों के माध्यम से क्रांतिकारी आंदोलन का वैचारिक पक्ष प्रस्तुत किया ।

प्रस्तुत शोधपत्र ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है।यह घोषणापत्रों,शोधपत्रों और समकालीन दस्तावेजों और द्वितीयक स्रोतों के आधार पर इस धारणा को चुनौती देता है कि भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन केवल भावनात्मक या हिंसात्मक प्रतिरोध तक सीमित था। इसके साथ ही यह स्थापित करने का प्रयास करता है कि भगवतीचरण वोहरा क्रांतिकारी आंदोलन के ऐसे प्रतिनिधि थे जिन्होंने कलम और पिस्तौल दोनों को समान महत्त्व देकर स्वतंत्रता संग्राम की वैचारिक एंव क्रियात्मक दिशा को नई ऊर्जा प्रदान की।

मुख्य शब्द: क्रांति,औपनिवेशिक शासन,घोषणापत्र, क्रांतिकारी आंदोलन,प्रतिरोध,संगठनात्मक ढांचा, तकनीकी ज्ञान,वैचारिक पक्ष।

जीवन परिचय

भगवतीचरण वोहरा प्रमुख क्रांतिकारी, समाजवादी चिंतक तथा हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के अग्रणी नेता थे। इनका जन्म 15 नवम्बर 1903 को तत्कालीन लाहौर में एक समृद्ध परिवार में हुआ था। इनका पैतृक निवास गुजरात में था, जहाँ से आकर इनके दादा आगरा में बसे थे और इनके पिता शिवचरण वोहरा सरकारी सेवा के कारण लाहौर में बस गये थे। इनके पिता रेल विभाग में उच्च पद पर सेवारत थे। वर्ष 1919 में ब्रिटिश सरकार द्वारा इनकी सेवाओं के लिए इन्हें "राय साहब" की उपाधि दी गई थी।[1] उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर हिंदी एवं संस्कृत के निजी शिक्षकों के मार्गदर्शन में हुई तथा बाद में उन्होंने विज्ञान वर्ग से इंटरमीडिएट उत्तीर्ण कर लाहौर के नेशनल कॉलेज में प्रवेश लिया। यह संस्थान लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित राष्ट्रीय शिक्षा का केंद्र था, जहाँ जयचंद विद्यालंकार, भगत सिंह और यशपाल जैसे व्यक्तित्वों के संपर्क ने उनके क्रांतिकारी और समाजवादी चिंतन को निर्णायक दिशा प्रदान की।[2]

प्रारंभिक दौर में वे महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित हुए, किंतु चौरी-चौरा घटना के पश्चात आंदोलन की वापसी से निराश होकर उन्होंने क्रांतिकारी मार्ग को अपनाया। वे नौजवान भारत सभा के प्रचार मंत्री तथा बाद में हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के प्रमुख वैचारिक स्तंभ और संगठनकर्ता बने। संगठन के घोषणापत्रों के निर्माण, द फिलॉसफी ऑफ द बम जैसे महत्वपूर्ण वैचारिक दस्तावेज़ के लेखन, क्रांतिकारी संगठन के विस्तार, संसाधनों की व्यवस्था तथा अनेक साहसिक अभियानों में उनकी केंद्रीय भूमिका रही। वे केवल विचारक नहीं थे, बल्कि वायसराय लॉर्ड इरविन की विशेष रेलगाड़ी पर बम विस्फोट की योजना, भगत सिंह को छुड़ाने के प्रयास तथा बम निर्माण जैसी जोखिमपूर्ण गतिविधियों में भी अग्रिम पंक्ति में रहे। 28 मई 1930 को रावी नदी के तट पर बम परीक्षण के दौरान वे शहीद हो गए। अल्पायु में ही जोखिमपूर्ण कार्य करते हुए उनका देहांत होना इस तथ्य का सशक्त प्रमाण है कि क्रांतिकारी आंदोलन की सफलता के लिए आवश्यक वैचारिक स्पष्टता, संगठनात्मक क्षमता और आत्मबलिदान की भावना इनमें मौजूद थी।

हथियारों के माध्यम से क्रांति : भगवती चरण वोहरा के क्रांतिकारी कार्य

भगवती चरण वोहरा भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के उन विरल व्यक्तित्वों में थे जिन्होंने सशस्त्र संघर्ष को केवल औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध का माध्यम न मानकर उसे एक व्यापक राजनीतिक उद्देश्य से जोड़ा। उनके लिए हथियारों का प्रयोग अराजक हिंसा या व्यक्तिगत प्रतिशोध का साधन नहीं था, बल्कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता, सामाजिक परिवर्तन और औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संगठित राजनीतिक संघर्ष का आवश्यक उपकरण था। यही कारण है कि उनके समस्त क्रांतिकारी जीवन में संगठन, वैचारिक स्पष्टता और सशस्त्र कार्रवाई एक-दूसरे के पूरक रूप में दिखाई देते हैं।

लाहौर के नेशनल कॉलेज में अध्ययन के दौरान उनका संपर्क जयचंद विद्यालंकार, भगत सिंह और यशपाल जैसे क्रांतिकारी युवाओं से हुआ, जिसने उनके व्यक्तित्व को निर्णायक दिशा प्रदान की।[3] प्रारंभिक चरण में वे महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर राष्ट्रीय आंदोलन में सम्मिलित हुए, किंतु चौरी-चौरा घटना के उपरांत आंदोलन की वापसी ने उन्हें यह अनुभव कराया कि औपनिवेशिक शासन केवल नैतिक आग्रहों अथवा संवैधानिक उपायों से समाप्त नहीं किया जा सकता। परिणामस्वरूप उन्होंने क्रांतिकारी मार्ग को अपनाया और संगठित सशस्त्र संघर्ष को राष्ट्रीय मुक्ति का प्रभावी साधन स्वीकार किया।

क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़ने के बाद भगवती चरण ने शीघ्र ही यह समझ लिया कि किसी भी सशस्त्र संघर्ष की सफलता केवल साहस या हथियारों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसके लिए अनुशासित संगठन, वैचारिक प्रशिक्षण और संसाधनों की सुदृढ़ व्यवस्था भी आवश्यक है। इसी दृष्टि से उन्होंने हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के प्रसिद्ध घोषणापत्र 'द रिवोल्यूशनरी' के पंजाब में सुरक्षित संरक्षण तथा गुप्त वितरण का दायित्व निभाया।[4] यह कार्य केवल साहित्य के प्रचार तक सीमित नहीं था, बल्कि युवाओं में क्रांतिकारी चेतना का विस्तार और संगठन के वैचारिक आधार को सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण प्रयास था।

मार्च 1926 में स्थापित 'नौजवान भारत सभा' में प्रचार मंत्री के रूप में भगवती चरण की भूमिका उनके संगठनात्मक कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।[5] सभा के कार्यक्रमों का संचालन, प्रचार-प्रसार, जनसभाओं का आयोजन तथा आर्थिक संसाधनों की व्यवस्था जैसे विविध कार्यों में वे समान रूप से सक्रिय रहते थे। वे किसी भी कार्य को छोटा नहीं समझते थे; आवश्यकता पड़ने पर स्वयं दरी बिछाने से लेकर सभा संचालन तक का उत्तरदायित्व निभाते थे। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने निजी संसाधनों और पारिवारिक संपन्नता का उपयोग भी संगठन की आवश्यकताओं की पूर्ति में किया।[6] साथियों की आर्थिक सहायता करना, क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए धन उपलब्ध कराना तथा आवश्यकता पड़ने पर निजी जीवन से अधिक संगठन को प्राथमिकता देना उनके व्यक्तित्व की विशिष्ट विशेषता थी। यही कारण था कि दल के भीतर वे केवल एक नेता नहीं, बल्कि अत्यंत विश्वसनीय सहयोगी के रूप में प्रतिष्ठित थे।

भगवती चरण ने क्रांतिकारी आंदोलन को ऐतिहासिक चेतना से जोड़ने का भी प्रयास किया। करतार सिंह सराभा जैसे शहीदों की स्मृति को जनमानस में जीवित रखने के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रमों में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई तथा अपने निजी व्यय से उनके चित्र तैयार करवाकर युवाओं में बलिदान और राष्ट्रीय गौरव की भावना का प्रसार किया।[7] उनके लिए सशस्त्र संघर्ष केवल तत्कालीन राजनीतिक कार्रवाई नहीं था, बल्कि भारतीय क्रांतिकारी परंपरा की निरंतरता का प्रतीक भी था।

इसी क्रम में, 1928 में साइमन कमीशन के विरोध के दौरान उन्होंने लाहौर में नौजवान भारत सभा के नेतृत्व में आयोजित प्रदर्शनों में अग्रणी भूमिका निभाई।[8] प्रदर्शनकारियों पर हुए हमले में वे स्वयं घायल हुए, किंतु इससे उनका मनोबल विचलित नहीं हुआ। यह घटना स्पष्ट करती है कि वे केवल योजनाएँ बनाने वाले विचारक नहीं थे, बल्कि जोखिमपूर्ण परिस्थितियों में स्वयं अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर नेतृत्व करने वाले कर्मयोगी क्रांतिकारी थे। यही सक्रियता आगे चलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन में उनके नेतृत्व और सशस्त्र क्रांति की तैयारी का आधार बनी।

क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार के साथ भगवती चरण वोहरा की भूमिका संगठनकर्ता से आगे बढ़कर उसकी रणनीतिक एवं तकनीकी आवश्यकताओं के समाधान तक पहुँच गई। काकोरी ट्रेन एक्शन के पश्चात संगठन के अनेक प्रमुख नेता गिरफ्तार अथवा शहीद हो चुके थे, जिसके कारण आंदोलन के पुनर्गठन और नई कार्यनीति की आवश्यकता अनुभव की गई।[9] यद्यपि सितंबर 1928 में, फिरोजशाह कोटला में आयोजित सम्मेलन में वे प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित नहीं थे, तथापि हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचएसआरए) के घोषणापत्र के निर्माण में उनकी केंद्रीय भूमिका व्यापक रूप से स्वीकार की जाती है।[10] इससे स्पष्ट होता है कि वे केवल सक्रिय कार्यकर्ता ही नहीं, बल्कि संगठन की वैचारिक दिशा और क्रांतिकारी रणनीति के प्रमुख निर्माता भी थे।

सांडर्स वध तथा केंद्रीय विधानसभा बम प्रकरण के बाद पुलिस द्वारा विभिन्न बम फैक्टरियों के पकड़े जाने से संगठन के समक्ष तकनीकी आत्मनिर्भरता की गंभीर चुनौती उत्पन्न हुई।[11] ऐसी परिस्थितियों में भगवती चरण ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाते हुए बम निर्माण की प्रक्रिया को पुनः शुरू करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने सहपाठी तथा रसायन विज्ञान के अध्यापक देवदत्त शर्मा से बम निर्माण की वैज्ञानिक विधि, आवश्यक रासायनिक प्रक्रियाओं तथा संबंधित साहित्य की जानकारी प्राप्त करने की व्यवस्था की। इसके अतिरिक्त दिल्ली के निकट रोहतक स्थित अपने विश्वस्त सहयोगी वैद्य लेखराम की सहायता से सुरक्षित वातावरण में विस्फोटक सामग्री तैयार कराई।[12] इन घटनाओं से स्पष्ट होता है कि उनके लिए सशस्त्र संघर्ष केवल साहस का विषय नहीं था, बल्कि वैज्ञानिक ज्ञान, तकनीकी दक्षता, गोपनीय संगठन और उपलब्ध संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग का भी प्रश्न था। यही कारण है कि वे क्रांतिकारी आंदोलन में हथियारों के वैज्ञानिक प्रयोग के प्रमुख सूत्रधार के रूप में उभरते हैं।

इन्हीं तैयारियों का परिणाम वायसराय लॉर्ड इरविन की विशेष रेलगाड़ी को बम से उड़ाने की योजना के रूप में सामने आया। यह कार्यवाही किसी व्यक्तिगत प्रतिशोध से प्रेरित नहीं थी, बल्कि औपनिवेशिक सत्ता की अभेद्यता की धारणा को चुनौती देने का एक सुविचारित राजनीतिक प्रयास थी। भगवती चरण के नेतृत्व में रेलमार्ग का चयन, रेलपथ के नीचे विस्फोटक स्थापित करने की योजना, विद्युत तारों और बैटरी के माध्यम से नियंत्रित विस्फोट की व्यवस्था तथा इन्द्रपाल जैसे विश्वस्त साथियों की नियुक्ति इस बात का प्रमाण है

कि क्रांतिकारी आंदोलन अब तकनीकी और रणनीतिक दृष्टि से अधिक परिपक्व हो चुका था। यद्यपि राजनीतिक परिस्थितियों के कारण इस योजना को कई बार स्थगित करना पड़ा, फिर भी 23 दिसंबर 1929 को इसका क्रियान्वयन किया गया। यद्यपि वायसराय सुरक्षित बच गये,[13] तथापि इस घटना ने ब्रिटिश शासन को यह स्पष्ट संदेश दिया कि भारतीय क्रांतिकारी केवल प्रतीकात्मक विरोध तक सीमित नहीं हैं, बल्कि संगठित और सुनियोजित सशस्त्र कार्रवाई करने में भी सक्षम हैं।

इस घटना के उपरांत महात्मा गांधी ने 'यंग इंडिया' में प्रकाशित 'दि कल्ट ऑफ दि बम' के माध्यम से क्रांतिकारियों और उनके कार्यों की आलोचना की। इसके प्रत्युत्तर में भगवती चरण वोहरा ने 'दि फिलासफी ऑफ दि बम' की रचना कर सशस्त्र संघर्ष का वैचारिक औचित्य प्रस्तुत किया।[14] उन्होंने स्पष्ट किया कि बम और पिस्तौल स्वयं क्रांति नहीं हैं; वे अन्यायपूर्ण और दमनकारी शासन के विरुद्ध प्रतिरोध के साधन मात्र हैं। उनके अनुसार, जब शासन जनता की वैध आकांक्षाओं का दमन करता है और शांतिपूर्ण परिवर्तन के सभी मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं, तब सशस्त्र प्रतिरोध ऐतिहासिक आवश्यकता बन जाता है। इस प्रकार उन्होंने हथियारों को अराजक हिंसा का नहीं, बल्कि राजनीतिक संघर्ष का नियंत्रित और उद्देश्यपूर्ण माध्यम सिद्ध किया।

जनवरी 1930 में, कानपुर में आयोजित हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की बैठक में भगवती चरण को संगठन का सचिव नियुक्त किया गया। यह दायित्व उनके नेतृत्व, वैचारिक क्षमता और साथियों के विश्वास का प्रमाण था। इसी बैठक में भगत सिंह तथा अन्य बंदी क्रांतिकारियों को जेल से मुक्त कराने की योजना बनाई गई।[15] उल्लेखनीय है कि इस जोखिमपूर्ण अभियान में भी उन्होंने स्वयं अग्रिम पंक्ति में रहने की इच्छा व्यक्त की। यह उनके व्यक्तित्व का विशिष्ट गुण था कि वे संकटपूर्ण कार्यों में अपने साथियों को आगे करने के स्थान पर स्वयं उत्तरदायित्व ग्रहण करते थे। दल के आर्थिक संसाधनों की व्यवस्था से लेकर साथियों की व्यक्तिगत सहायता तक, वे सदैव संगठन को अपने निजी जीवन से ऊपर रखते थे। इसी कारण विषम परिस्थितियों, दुष्प्रचार और व्यक्तिगत आरोपों के बावजूद उनके प्रति साथियों का विश्वास कभी कम नहीं हुआ।

28 मई 1930 को रावी नदी के तट पर भगत सिंह को मुक्त कराने के अभियान में प्रयुक्त होने वाले बम का परीक्षण करना था। इस परीक्षण में भी उन्होंने अपने साथियों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए स्वयं बम की जाँच की, किंतु दुर्भाग्यवश विस्फोट उनके हाथ में ही हो गया और वे वीरगति को प्राप्त हुए।[16] उनकी शहादत केवल एक क्रांतिकारी की मृत्यु नहीं थी, बल्कि उस नेतृत्व-दर्शन का सर्वोच्च उदाहरण थी जिसमें नेता सबसे पहले स्वयं जोखिम उठाता है। वस्तुतः भगवती चरण वोहरा का संपूर्ण क्रांतिकारी जीवन यह सिद्ध करता है कि उनके लिए हथियार कभी भी अंतिम लक्ष्य नहीं थे, बल्कि ये राष्ट्रीय स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और समाजवादी पुनर्निर्माण के साधन थे। संगठन निर्माण, वैज्ञानिक ढंग से हथियारों की तैयारी, साहसिक अभियानों का नेतृत्व तथा सर्वोच्च बलिदान—इन सभी के पीछे उनकी स्पष्ट वैचारिक दृष्टि कार्यरत थी। इसलिए उनके व्यक्तित्व का सशस्त्र पक्ष उनके वैचारिक चिंतन से पृथक नहीं, बल्कि उसी का व्यावहारिक विस्तार था।

विचारों के माध्यम से क्रांति: भगवती चरण के व्यक्तित्व का वैचारिक पक्ष

यदि हम भगवती चरण के वैचारिक दर्शन और साहित्यिक अवदान को समझना चाहें तो उनकी तीन युगांतकारी रचनाओं—नौजवान भारत सभा का घोषणापत्र (1928), हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का घोषणापत्र (1929) और 'दि फिलासफी ऑफ दि बम' (1930)—का अनुशीलन अनिवार्य है। यद्यपि कतिपय स्रोतों और ऐतिहासिक विमर्शों में इन तीनों को केवल भगवती चरण की एकल कृति स्वीकार नहीं किया जाता है, बल्कि इन्हें सामूहिक क्रांतिकारी चेतना की अभिव्यक्ति माना जाता है। तथापि, कुछ शोध और उनके सह क्रांतिकारियों (यशपाल और शिव वर्मा) के संस्मरण यह पुष्टि करते हैं कि इन दस्तावेजों के मूल प्रारूप को तैयार करने का श्रेय भगवती चरण वोहरा को है।

राजनीतिक दृष्टि से बात करें तो भगवती चरण औपनिवेशिक शासन से पूर्ण स्वतंत्रता के पक्षधर थे। उनके अनुसार 'पूर्ण स्वराज्य' का अर्थ केवल ब्रिटिश सत्ता का अंत नहीं था, बल्कि ऐसी संप्रभु राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना था जिसमें राज्यसत्ता का वास्तविक नियंत्रण श्रमिकों, किसानों तथा व्यापक जनसमुदाय के हाथों में निहित हो।[17] इसी कारण उन्होंने 'होम रूल' तथा 'डोमिनियन स्टेटस' जैसी संवैधानिक मांगों को वास्तविक स्वतंत्रता का विकल्प न मानते हुए औपनिवेशिक प्रभुत्व का परिवर्तित स्वरूप माना। उनके लिए राजनीतिक स्वतंत्रता का उद्देश्य केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि सत्ता की सामाजिक प्रकृति में आमूलचूल परिवर्तन था।

इसी वैचारिक आधार पर उन्होंने गांधीवादी अहिंसा की आलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत की। यद्यपि उन्होंने गांधी के राष्ट्रीय जागरण में योगदान को स्वीकार किया, किंतु उनका मत था कि सशस्त्र साम्राज्यवाद के विरुद्ध केवल नैतिक आग्रह पर्याप्त नहीं हो सकता। उनके अनुसार, क्रांति अन्यायपूर्ण एवं शोषणकारी व्यवस्था के व्यापक रूपांतरण का माध्यम है, न कि मात्र हिंसात्मक कार्यवाही। 'बम का दर्शन' में उन्होंने स्पष्ट किया कि आतंकवाद क्रांति का अंतिम लक्ष्य नहीं, बल्कि उसका एक रणनीतिक चरण है, जिसका उद्देश्य शासक वर्ग में भय, शोषित जनता में आत्मविश्वास तथा राष्ट्रीय सम्मान की भावना का संचार करना था। इस प्रकार उनका राजनीतिक चिंतन राष्ट्रीय स्वतंत्रता, जनसंगठन और समाजवादी पुनर्निर्माण की समन्वित अवधारणा पर आधारित था।[18]

राजनीतिक स्वतंत्रता की इस अवधारणा को वोहरा ने आर्थिक स्वतंत्रता से अविभाज्य माना। उनके अनुसार यदि राजनीतिक सत्ता परिवर्तन के बावजूद आर्थिक शोषण की संरचना यथावत बनी रहे, तो स्वतंत्रता अधूरी रहेगी। इसी कारण उनका आर्थिक चिंतन समाजवाद पर आधारित था, जिसे उन्होंने औपनिवेशिक भारत की आर्थिक विषमता, वर्गीय शोषण और सामाजिक अन्याय के समाधान के रूप में प्रस्तुत किया। हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के घोषणापत्र में समाजवाद को पूर्ण स्वराज तथा आर्थिक समानता की स्थापना का आधार माना गया है। उनके अनुसार क्रांति का उद्देश्य केवल विदेशी शासन का अंत नहीं, बल्कि पूंजीवाद, वर्गभेद और विशेषाधिकारों से मुक्त आर्थिक व्यवस्था का निर्माण भी था।[19]

इसी दृष्टि से उन्होंने भारतीय मजदूरों और किसानों की स्थिति का विश्लेषण करते हुए उन्हें 'दोहरे शोषण' का शिकार बताया। इसमें एक तरफ विदेशी पूंजीवाद था, तो दूसरी तरफ भारतीय पूंजीपति वर्ग, जो अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए औपनिवेशिक शासन से समझौता करता था। नौजवान भारत सभा के घोषणापत्र में उन्होंने प्रतिपादित किया कि वास्तविक स्वतंत्रता तभी संभव है जब "मनुष्य द्वारा मनुष्य का तथा राष्ट्र द्वारा राष्ट्र का शोषण" पूर्णतः समाप्त हो। उन्होंने रमेशचन्द्र दत्त और दादाभाई नौरोजी के आर्थिक विश्लेषणों का उल्लेख करते हुए ब्रिटिश शासन को भारत की निर्धनता, औद्योगिक पतन तथा व्यापक आर्थिक अवनति के लिए उत्तरदायी माना। उनके अनुसार भूख, निर्धनता और बीमारी जैसी समस्याओं का समाधान दान अथवा सुधारवादी उपायों से नहीं, बल्कि शोषणकारी आर्थिक संरचना में क्रांतिकारी परिवर्तन से ही संभव है।[20] इसी कारण उन्होंने सर्वहारा-आधारित समाजवादी व्यवस्था का समर्थन किया, जिसमें राजनीतिक और आर्थिक सत्ता श्रमजीवी वर्ग के हाथों में निहित हो।

स्पष्टतः, वोहरा का आर्थिक चिंतन व्यापक सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ था। उनके अनुसार आर्थिक समानता तभी स्थायी हो सकती है जब समाज की संरचना भी समानता, न्याय और मानवीय गरिमा के सिद्धांतों पर पुनर्गठित की जाए। इसी संदर्भ में उन्होंने वर्गविहीन और शोषणमुक्त सामाजिक व्यवस्था की परिकल्पना प्रस्तुत की, जहाँ पूंजीवाद, वर्ग-भेद और विशेषाधिकारों का पूर्णतः अंत हो तथा 'सामाजिक परजीवियों' का प्रभुत्व समाप्त कर श्रमजीवी वर्ग को सामाजिक नेतृत्व प्रदान किया जाए।[21] उनके लिए क्रांति का अंतिम उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण था जिसमें प्रत्येक व्यक्ति सम्मानपूर्ण और शोषणमुक्त जीवन व्यतीत कर सके।

वोहरा के सामाजिक चिंतन का स्वाभाविक विस्तार जो उनके धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण में परिलक्षित होता है, वह तर्कशीलता, वैज्ञानिक चेतना और राष्ट्रीय पुनर्जागरण की अवधारणा पर आधारित था। उनके अनुसार धार्मिक रूढ़िवादिता, अंधविश्वास और सांप्रदायिकता भारतीय समाज की प्रगति तथा राष्ट्रीय एकता के मार्ग में गंभीर बाधाएँ थीं। उनका मत था कि भारतीय समाज तुच्छ धार्मिक विवादों में उलझकर अपने वास्तविक शत्रु—औपनिवेशिक दासता, अज्ञानता और सामाजिक शोषण—से विमुख हो जाता है।[22] बम का दर्शन में उन्होंने स्पष्ट किया कि एक सच्चा क्रांतिकारी केवल तर्क-बुद्धि के प्रति उत्तरदायी होता है और किसी भी प्रकार की धार्मिक या वैचारिक संकीर्णता उसके लक्ष्य को विचलित नहीं कर सकती। इसी कारण उन्होंने युवाओं से मानसिक दासता, अंधविश्वास और संकीर्ण धार्मिक मान्यताओं से मुक्त होकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान किया। यद्यपि उनका क्रांतिकारी दर्शन पारंपरिक ईश्वरवाद की आलोचना करता है, तथापि उसका अंतिम उद्देश्य न्याय, समानता और मानवीय मूल्यों पर आधारित समाज की स्थापना था।

इसी क्रम में, उनका सांस्कृतिक चिंतन भारत की गौरवशाली ऐतिहासिक विरासत के प्रति सम्मान तथा समकालीन सांस्कृतिक जड़ता के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण का समन्वय प्रस्तुत करता है। उन्होंने भारत की प्राचीन सांस्कृतिक संपदा और सभ्यतागत गौरव को स्वीकार करते हुए आत्मसम्मान को राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का आधार माना। उनके अनुसार यदि कोई राष्ट्र विदेशी प्रभुत्व के समक्ष आत्मसमर्पण कर दे और अपनी सांस्कृतिक अस्मिता के प्रति सम्मान खो दे, तो उसकी गौरवशाली परंपराएँ भी अपना वास्तविक महत्व खो देती हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने गुरु गोविन्द सिंह, शिवाजी और हरि सिंह नलवा जैसे ऐतिहासिक नायकों के उदाहरण प्रस्तुत कर युवाओं में साहस, आत्मरक्षा, राष्ट्रीय गौरव और आत्मविश्वास की भावना जागृत करने का प्रयास किया।[23] उनका अंतिम लक्ष्य ऐसी 'भारतीय कौम' का निर्माण था, जो तर्कशीलता, मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक आत्मगौरव और स्वतंत्र चेतना के आधार पर विश्व के समक्ष एक आदर्श राष्ट्र के रूप में स्थापित हो सके। इस प्रकार, वोहरा का धार्मिक एवं सांस्कृतिक चिंतन धर्मनिरपेक्षता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के समन्वित स्वरूप को अभिव्यक्त करता है।

मूल्यांकन

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि भगवती चरण वोहरा भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन के उन विरल व्यक्तित्वों में थे, जिनके जीवन में विचार और कर्म, लेखनी और शस्त्र तथा सिद्धांत और व्यवहार का अद्वितीय समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने क्रांति को न तो केवल वैचारिक विमर्श तक सीमित रखा और न ही उसे मात्र सशस्त्र संघर्ष का पर्याय माना। उनके लिए हथियार स्वयं में लक्ष्य नहीं थे, बल्कि समाजवादी, समतामूलक और शोषणमुक्त व्यवस्था की स्थापना का साधन थे। इसी कारण बम का दर्शन, नौजवान भारत सभा तथा हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के घोषणापत्रों में प्रतिपादित उनके विचार उनके संपूर्ण क्रांतिकारी जीवन में व्यवहार के स्तर पर भी प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं।
वोहरा के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह प्रत्येक जोखिमपूर्ण कार्य में स्वयं अग्रिम पंक्ति में खड़े होते थे। साइमन कमीशन के विरोध से लेकर वायसराय लॉर्ड इरविन की विशेष रेलगाड़ी के नीचे बम विस्फोट की योजना तक उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। भगत सिंह तथा अन्य साथियों को छुड़ाने की योजनाओं में भी उन्होंने स्वयं आगे रहकर नेतृत्व किया। यही प्रवृत्ति 28 मई 1930 को रावी तट पर बम परीक्षण के समय भी दिखाई देती है, जहाँ उन्होंने अपने साथियों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए स्वयं परीक्षण किया और अंततः शहीद हो गए। उनका यह बलिदान इस तथ्य का प्रतीक है कि उन्होंने अपने सिद्धांतों की पुष्टि केवल लेखनी से नहीं, बल्कि अपने जीवन के माध्यम से भी की।

भगवतीचरण केवल साहसी क्रांतिकारी ही नहीं, बल्कि अत्यंत मिलनसार, संगठन-कुशल और संसाधन-संपन्न व्यक्तित्व के धनी थे। संगठन जब भी तकनीकी, आर्थिक अथवा अन्य किसी कठिनाई से घिरता, वे अपने व्यापक सामाजिक संपर्कों के माध्यम से समाधान खोज लेते थे। बम निर्माण की तकनीक के लिए रसायन विज्ञान के अध्यापक देवदत्त शर्मा तथा वायसराय की रेलगाड़ी के नीचे विस्फोट हेतु आवश्यक तकनीकी सहायता के संदर्भ में वैद्य लेखराम जैसे व्यक्तियों से संपर्क स्थापित करना उनकी व्यावहारिक दक्षता और संगठनात्मक क्षमता का परिचायक है। उन्होंने अपने साथियों की आर्थिक सहायता, संगठन के लिए संसाधनों की व्यवस्था तथा संकट के समय सहयोग को अपना नैतिक दायित्व माना। व्यक्तिगत जीवन में भी उन्होंने परिवार और निजी सुख-सुविधाओं की अपेक्षा राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखा। क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण उन्हें और उनकी पत्नी

दुर्गा देवी को अनेक सामाजिक आलोचनाओं तथा कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, किंतु इन प्रतिकूलताओं ने भी उनकी वैचारिक निष्ठा और क्रांतिकारी प्रतिबद्धता को कभी विचलित नहीं किया।

अतः भगवती चरण वोहरा का समग्र मूल्यांकन उन्हें केवल एक निर्भीक क्रांतिकारी या विस्फोटक विशेषज्ञ के रूप में सीमित नहीं करता, बल्कि उन्हें भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के ऐसे मौलिक समाजवादी चिंतक के रूप में स्थापित करता है, जिन्होंने विचार और हथियार, सिद्धांत और व्यवहार तथा बौद्धिक नेतृत्व और क्रांतिकारी कर्म के मध्य एकता स्थापित की। भारतीय क्रांतिकारी परंपरा में उनका व्यक्तित्व इस सत्य का प्रमाण है कि स्थायी सामाजिक परिवर्तन केवल वैचारिक स्पष्टता अथवा केवल साहसिक संघर्ष से नहीं, बल्कि दोनों के सृजनात्मक समन्वय से ही संभव है। इसी दृष्टि से भगवती चरण वोहरा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में 'हथियारों और विचारों के एकीकरण' के सर्वाधिक सशक्त और प्रेरणादायी प्रतिमानों में से एक सिद्ध होते है।

संदर्भ

1.बरीच, मलविन्द्र जीत सिंह. (2012).ए बायोग्राफी ऑफ भगवतीचरण वोहरा एंड दुर्गा भाभी.यूनीस्टार बुक प्रा. लि. पृ.11-12
2.वहीं,बरीच.पृ.18
3 पाल,यश(2015)सिंहावलोकन.लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज .पृ.65
4.वही,यशपाल.पृ.65
5. वहीं,बरीच. पृ.36
6.वही, यशपाल. पृ.67
7.वही, यशपाल. पृ.67
8.सिंह,जयपाल(2003).हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन ऐसोसिएशन एंड इट्स कंट्रीब्यूशन टू द नेशनल मूवमेंट.शोध गंगा से पुनःप्राप्त. पृ.99
9.वर्मा,शिव.(2010).क्रांतिकारी आंदोलन का वैचारिक इतिहास.राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ. पृ. 20
10.मैकलन,कामा.(2016).पेंगुइन रैंडम हाऊस, हरियाणा,भारत .पृ.26
11.गुप्त,मन्मथनाथ.(2025). भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास.आत्माराम एंड संस, दिल्ली. पृ.217
12. वही, यशपाल.पृ.200
13.निगम,नंदकिशोर.बलिदान, इंटरनेट आर्काइव्स.ओआरजी. पृ.50-52
14.गृह मंत्रालय, भारत सरकार.(2020). टेररिज्म इन इंडिया(1917-1936). मनोहर पब्लिशर एंड डिस्ट्रीब्यूटर,नई दिल्ली.पृ.78
15.वैशमपायन,विश्वनाथ. (1967).अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद, भाग 2.पृ.18
16.वही.वैशमपायन, भाग 3, पृ.203
17.घोष, अजय और ठाकुर,गोपाल. (2006). भगत सिंह और उनके साथी,राहुल फाउंडेशन, लखनऊ पृ.78
18.सिंह,जगमोहन और लाल,चमन.(2025).भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,नई दिल्ली,पृ.326
19.वर्मा, शिव.(जनवरी 2010).संस्मृतियाँ: क्रांतिकारी शहीदों के संस्मरणात्मक रेखाचित्र.राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ.पृ.151
20.वहीं,बरीच.पृ.187
21.वही,बरीच.पृ.192
22.लक्ष्मी,पद्मा.(2012). भगत सिंह के विचार.नवप्रभात साहित्य, दिल्ली.पृ.65
23.वही,सिंह,जगमोहन और लाल,चमन.पृ.328

Copyright & License:
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.